Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MMHAPU
MJMC/SEM 1/Paper 101
Date- 17/06/2021

Marshall McLuhan's Approach
मार्शल मैक्लूहान का दृष्टिकोण

Herbert Marshall Mcluhan एक कनाडाई प्रोफेसर, दार्शनिक और बौद्धिक थे। इन्होंने 1960 के दशक में मीडिया संबंधी अध्ययन पर प्रमुख रूप से काम किये। इन्होंने अपनी पुस्तक *'Understanding Media : The Extension of Man'* 1964, में *"Communication Technology Determinism Theory"* को प्रस्तुत किया। इनकी पुस्तक *'The Medium is the Message'*, 1967 भी काफी चर्चित है। इसका प्रसिद्ध वाक्य 'माध्यम ही संदेश है' का प्रयोग आज भी किया जाता है। संचार तकनीक हमारे चिंतन और अवबोधन (Perception) की आदतों को बदल देता है। मैक्लूहान के अनुसार, प्रत्येक समय विशेष में संचार की कोई खास तकनीक ज्यादा प्रभावी होता है। अगर माध्यम नह हो तो संदेश का कोई मतलब नहीं रह जाता है। किसी संदेश का क्या असर होगा यह माध्यम पर निर्भर करता है। इनके अनुसार, मीडिया कंटेन्ट या सामग्री का कोई खास महत्व नहीं होता है। मीडिया का महत्वपूर्ण प्रभाव उसके स्वरूप के कारण होता है न कि उसके कंटेन्ट के कारण। उदाहरण के लिए अमेरिका में राष्ट्रपति का चुनाव टेलीविजन पर होनेवाली बहस पर आधारित होता है। इस बहस में उम्मीदवार की प्रस्तुति, हावभाव आदि का काफी असर होता है। इसमें मतदाताओं के विचारों को प्रभावित करने का काम प्रमुख रूप से मीडिया करता है।

माध्यम ही संदेश है, क्योंकि माध्यम पर निर्भर करता है कि किसी संदेश का विस्तार किस मात्रा में, किन लोगों तक और किस रूपों में होगा। मैक्लूहान के अनुसार, शब्दों से ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि उसे लिखा किस चीज पर जा रहा है। इनकी मान्यता है कि ''प्रत्येक नई तकनीक एक नया पर्यावरण को निर्मित करता है। जब हस्तलेखन विधि था, लोग अपने विचारों को लिपिबद्ध या उसका लेखन हाथों से कलात्मक तरीके से करते थे। मुद्रित माध्यमों का विकास होने से लोग विचारों को कलात्मक ढंग से छापने लगे। यह मध्ययुगीन कला थी। वर्तमान रूप में देखें तो आज तकनीकी प्रक्रिया कलात्मक रूप में मौजूद है।

लेकिन माध्यम ही संदेश है इसे काफी विवादास्पद माना गया। अधिकांश सामाजिक शोधकर्त्ताओं ने मैक्लूहान की दृष्टि को खारिज करते हुए इस बात के प्रमाण प्रस्तुत किए कि संदेश कितना शक्तिशाली होता है और श्रोता की अपनी विशेषताएं एवं संदेश की विशेषताएं दोनों मिलकर किस तरह का प्रभाव डालती है। आलोचकों के अनुसार, माध्यम की तुलना में संदेश ज्यादा प्रभावित होता है। इसलिए संदेश को महत्वपूर्ण मानने वाले लोग बेहतर संदेश

रचना को प्राथमिकता देते हैं। आदिम व्यवस्था का मानव, लेखन कला, मुद्रित माध्यमों से होता हुआ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में पहुंच गया है। विश्व एक 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित हो गया है।

मार्शल मैक्लूहान ने वर्ष 1964 में कनेडियन आर्थिक इतिहासकार H.M. Innis के सिद्धांत को आगे बढ़ाया। एच.एम. आनिस ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वर्ष 1950–51 में **टोरंटो स्कूल** की स्थापना की। इन्होंने बताया कि प्राचीन सभ्यताओं में संचार के विभिन्न तकनीक में परिवर्तनों के विकास का असर पूरी सभ्यता पर पड़ा। उदाहरण के लिए प्राचीन ग्रीक में मौखिक संचार से लिखित संचार की ओर विकास हुआ जिसमें विविध प्रकार के आविष्कार संभव हुआ और शिक्षा पर पुरोहित प्रणाली का एकाधिकार समाप्त हुआ। इसी तरह जब मुद्रण प्रणाली Printing Technology का विकास हुआ तो उसने नौकरशाही एवं एकाधिकारी सत्ता को चुनौती दी और नागरिक स्वतंत्रता की अवधारणा को मजबूती दी। मार्शल मैक्लूहान ने इस सिद्धांत को प्रमुख रूप से प्रिंटिंग मीडिया के क्षेत्र में विकसित किया। प्रिंटिंग माध्यमों के सम्बंध में उन्होंने लिखा कि ''टाइपोग्राफी के विस्तार ने मनुष्य को राष्ट्रीयता उद्योगवाद, व्यापार बाजार और व्यापक शिक्षा प्रदान की''।

Communication Technology Determinism Theory

यह सिद्धांत मीडिया केंद्रित सिद्धांत है जो किसी विशेष संचार तकनीक में सामाजिक परिवर्तन की क्षमता पर जोर डालता है। इस सिद्धांत के प्रमुख तत्व निम्नलिखित है–

1. समाज के लिए बुनियादी चीज संचार तकनीक है।
2. हर एक तकनीक संचार के किसी खास स्वरूप, अंतर्वस्तु और प्रयोग के प्रति जुड़ी है।
3. संचार तकनीक का विस्तार सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करता है।
4. संचार क्रांति के जरिए सामाजिक क्रांति लायी जा सकती है।

इस प्रकार मार्शल मैक्लूहान संचार की विषय–वस्तु के बजाय प्रक्रिया पर ज्यादा जोर देते हैं। इनके अनुसार, हर नया माध्यम अनुभवों, पुरानी सीमाओं को तोड़ता है और नए परिवर्तनों का रास्ता खोलता है। जिस तरह कार्ल मार्क्स आर्थिक तत्वों को सामाजिक परिवर्तन का मुख्य बुनियादी आधार मानते हैं उसी तरह मैक्लूहान ने संचार माध्यमों को सामाजिक परिवर्तन का बुनियादी आधार माना।

*****